International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

प्रवासी साहित्य और हिंदी

ज्योति कुमारी

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर

सार

प्रवासी एक आबादी है जो उन क्षेत्रों में बिखरी हुई है जो इसके भौगोलिक मूल स्थान से अलग हैं । [2] [3] ऐतिहासिक रूप से, इस शब्द का उपयोग पहले हेलेनिक दुनिया में यूनानियों के फैलाव के संदर्भ में किया गया था , और बाद में बेबीलोनियन निर्वासन के बाद यहूदियों के फैलाव के संदर्भ में किया गया था । [4] [5] [6] [7] "डायस्पोरा" शब्द का उपयोग आज उन लोगों के संदर्भ में किया जाता है जो एक विशिष्ट भौगोलिक स्थान से संबंधित हैं, लेकिन वर्तमान में कहीं और रहते हैं। [8] [9] [10]

उल्लेखनीय रूप से बड़ी प्रवासी आबादी के उदाहरण असीरियन-कैल्डियन-सीरियाक प्रवासी हैं, जो प्रारंभिक अरब-मुस्लिम विजय के दौरान और उसके बाद उत्पन्न हुए और असीरियन नरसंहार के बाद भी बढ़ते रहे ; [11] [12] दक्षिणी चीनी और भारतीय जिन्होंने 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान अपनी मातृभूमि छोड़ दी; आयरिश प्रवासी जो महान अकाल के दौरान और उसके बाद अस्तित्व में आए ; [13] स्कॉटिश प्रवासी जो हाइलैंड क्लीयरेंस और लोलैंड क्लीयरेंस के बाद बड़े पैमाने पर विकसित हुए ;[14] भारतीय उपमहाद्वीप कीखानाबदोश रोमानी आबादी ; [15] इतालवी प्रवासी और मैक्सिकन प्रवासी ; सर्कसियन नरसंहार के बादसर्कसियन; इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष और व्यापक अरब-इजरायल संघर्ष के कारणफिलिस्तीनी प्रवासी ; [16] अर्मेनियाई नरसंहार के बाद अर्मेनियाई प्रवासी; [17] [18] लेबनानी गृहयुद्ध के कारणलेबनानी प्रवासी ;[19] ग्रीक आबादी जो कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के बाद भाग गई या विस्थापित हो गई [20] और बाद में ग्रीक नरसंहार [21] साथ ही इस्तांबुल नरसंहार के बाद ; [22] और इंग्लैंड की नॉर्मन विजय के बाद एंग्लो-सैक्सन (मुख्य रूप से बीजान्टिन साम्राज्य में)का प्रवास। [23]

समकालीन समय में, विद्वानों ने विभिन्न प्रकार के प्रवासी लोगों को उनके कारणों के आधार पर वर्गीकृत किया है, जैसे उपनिवेशवाद, व्यापार/श्रम प्रवास, या सामाजिक सामंजस्य जो प्रवासी समुदायों के भीतर मौजूद है और पैतृक भूमि से उनका संबंध है। कुछ प्रवासी समुदाय अपनी मातृभूमि के साथ मजबूत सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध बनाए रखते हैं। अन्य गुण जो कई डायस्पोरा के विशिष्ट हो सकते हैं, वे हैं पैतृक भूमि पर वापसी के विचार, मूल क्षेत्र के साथ-साथ डायस्पोरा में अन्य समुदायों के साथ संबंधों के किसी भी रूप को बनाए रखना, और नए मेजबान देशों में पूर्ण एकीकरण की कमी। प्रवासी अक्सर अपने ऐतिहासिक संबद्धता वाले देश से संबंध बनाए रखते हैं और आमतौर पर अपनी मातृभूमि के प्रति अपने वर्तमान मेजबान देश की नीतियों को प्रभावित करते हैं। "प्रवासी प्रबंधन" हैरिस मायलोनास का एक शब्द है"उन दोनों नीतियों का वर्णन करने के लिए फिर से संकल्पना की गई है जिनका पालन राज्य विदेशों में अपने प्रवासी भारतीयों के साथ संबंध बनाने के लिए करते हैं और उन नीतियों को जो प्रवासी समुदायों के घर लौटने पर उनके समावेश और एकीकरण में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।" [24]

संयुक्त राष्ट्र की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार , 17.5 मिलियन की आबादी के साथ भारतीय प्रवासी दुनिया का सबसे बड़ा प्रवासी है, इसके बाद 11.8 मिलियन की आबादी के साथ मैक्सिकन प्रवासी और 10.7 मिलियन की आबादी के साथ चीनी प्रवासी हैं । [25]

हिन्दी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में सह-आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी–फ़ारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है।[5][6] एथनोलॉग के अनुसार हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।[7] विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।[8]

भारत की जनगणना २०११ में 57.1% भारतीय जनसंख्या हिन्दी जानती है[9] जिसमें से 43.63% भारतीय लोगों ने हिन्दी को अपनी मूल भाषा या मातृभाषा घोषित किया था।[10][11][12] इसके अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों में 14 करोड़ 10 लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू, व्याकरण के आधार पर हिन्दी के समान है, एवं दोनों ही हिन्दुस्तानी भाषा की परस्पर-सुबोध्य रूप हैं। एक विशाल संख्या में लोग हिन्दी और उर्दू दोनों को ही समझते हैं। भारत में हिन्दी, विभिन्न भारतीय राज्यों की 14 आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्र की बोलियों का उपयोग करने वाले लगभग 1 अरब लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है। हिन्दी भारत में सम्पर्क भाषा का कार्य करती है [9][13] और कुछ हद तक पूरे भारत में सामान्यतः एक सरल रूप में समझी जानेवाली भाषा है। कभी-कभी 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग नौ भारतीय राज्यों के सन्दर्भ में भी उपयोग किया जाता है, जिनकी आधिकारिक भाषा हिन्दी है और हिन्दी

भाषी बहुमत है, अर्थात् बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, जम्मू और कश्मीर (२०२० से) उत्तर प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का।[14]

हिन्दी और इसकी बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं।[15] फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात में भी हिन्दी या इसकी मान्य बोलियों का उपयोग करने वाले लोगों की बड़ी संख्या मौजूद है।[2] फरवरी 2019 में अबू धाबी में हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली।[16][17][18]

परिचय

हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द 'सिन्धु' से माना जाता है। 'सिन्धु' सिन्धु नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द+ईक) 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इण्डिका' या लैटिन 'इण्डेया' या अंग्रेजी शब्द 'इण्डिया' आदि इस 'हिन्दीक' के ही दूसरे रूप हैं। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफ़ुद्दीन यज्दी' के 'ज़फ़रनामा'(1424) में मिलता है। प्रमुख उर्दू लेखकों ने 19वीं सदी की सूचना तक अपनी भाषा को हिंदी या हिंदवी के रूप में संदर्भित करते रहे।[21]

प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन ने अपने "हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत" शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स्' ध्वनि नहीं बोली जाती थी बल्कि 'स्' को 'ह्' की तरह बोला जाता था। जैसे संस्कृत शब्द 'असुर' का अवेस्ता में सजाति समकक्ष शब्द 'अहुर' था। अफ़गानिस्तान के बाद सिन्धु नदी के इस पार हिन्दुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिन्द', 'हिन्दुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को विशेषण के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का' या 'हिन्द से'। यही 'हिन्दीक' शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इण्डिके', 'इण्डिका', लैटिन में 'इण्डेया' तथा अंग्रेजी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवं फ़ारसी साहित्य में भारत (हिन्द) में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान-ए-हिन्दी' पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद अरबी-फ़ारसी बोलने वालों ने 'ज़बान-ए-हिन्दी', 'हिन्दी ज़बान' अथवा 'हिन्दी' का प्रयोग दिल्ली-आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया।

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक सहस्र वर्ष पुराना माना गया है। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अन्तिम अवस्था 'अवहट्ठ से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं। [22] चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने इसी अवहट्ट को 'पुरानी हिन्दी' नाम दिया।

अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्मकाल के समय को संक्रान्तिकाल कहा जा सकता है। हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। १००० ई॰ के आसपास इसकी स्वतन्त्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक सन्दर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुईं। अपभ्रंश का जो भी कथ्य रूप था - वही आधुनिक बोलियों में विकसित हुआ।

अपभ्रंश के सम्बन्ध में 'देशी' शब्द की भी बहुधा चर्चा की जाती है। वास्तव में 'देशी' से देशी शब्द एवं देशी भाषा दोनों का बोध होता है। भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में उन शब्दों को 'देशी' कहा है जो संस्कृत के तत्सम एवं सद्भव रूपों से भिन्न हैं। ये 'देशी' शब्द जनभाषा के प्रचलित शब्द थे, जो स्वभावतः अप्रभंश में भी चले आए थे। जनभाषा व्याकरण के नियमों का अनुसरण नहीं करती, परन्तु व्याकरण को जनभाषा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना पड़ता है। प्राकृत-व्याकरणों ने संस्कृत के ढाँचे पर व्याकरण लिखे और संस्कृत को ही प्राकृत आदि की प्रकृति माना। अतः जो शब्द उनके नियमों की पकड़ में न आ सके, उनको देशी संज्ञा दी गयी।

अंग्रेजी काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय हिन्दी के विकास में एक नयी चेतना आयी। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी सहित अनेक नेताओं ने भारतीय एकता के लिये हिन्दी के विकास का समर्थन किया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रयासों से हिन्दी को एक नयी ऊँचाई मिली। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया। [23]

शब्द "डायस्पोरा" ग्रीक क्रिया διασπείρω (डायस्पेरो), "मैं बिखेरता हूं", "मैं चारों ओर फैलता हूं" से लिया गया है, जो बदले में διά (डिया), "बीच, पार, पार" और क्रिया σπείρω (स्पीरो) से बना है।), "मैं बोता हूं, मैं बिखेरता हूं"। प्राचीन ग्रीस में शब्द διασπορά (डायस्पोरा) का अर्थ "बिखराव" था [26] और इसका उपयोग अन्य बातों के साथ-साथ एक प्रमुख शहर-राज्य के नागरिकों को संदर्भित करने के लिए किया जाता था, जो उपनिवेशीकरण के उद्देश्य से एक विजित भूमि पर चले गए , ताकि क्षेत्र को अपने में मिला लिया जा सके। साम्राज्य।स्पार्टन शासन के तहत मेसेनियन और एजियानाइट्स, जैसा कि थ्यूसीडाइड्स ने अपने "पेलोपोनेसियन युद्धों के इतिहास" में वर्णित किया है।

इस मूल अर्थ में इसका प्रयोग पहली बार तब किया गया जब हिब्रू बाइबिल का ग्रीक में अनुवाद किया गया; [28] निर्वासन के परिणामस्वरूप बने प्रवासी भारतीयों का पहला उल्लेख सेप्टुआजेंट में मिलता है , सबसे पहले

- व्यवस्थाविवरण 28:25, वाक्यांश में ἔσῃ ἐν διασπορᾷ ἐν πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς γῆς , esē en diaspore तैस बेसिलियाइस तेस गेस , जिसका अर्थ है "तू पृथ्वी के सभी राज्यों में फैला हुआ होगा"

और दूसरे में

- भजन 146(147).2, वाक्यांश में οἰκοδομῶν Ἰερουσαλὴμ ὁ Κύριος καὶ τὰς διασπορὰς τοῦ Ἰσ ραὴλ ἐπισυνάξει , ओइकोडोमोन इरूसलेम हो किरियोस काइ तस डायस्पोरास टू इजराइल एपिसिनैक्सी , जिसका अर्थ है "प्रभु यरूशलेम का निर्माण करते हैं: वह बहिष्कृत लोगों को एक साथ इकट्ठा करते हैं इजराइल"।

बाइबिल का ग्रीक में अनुवाद होने के बाद, डायस्पोरा शब्द का इस्तेमाल उत्तरी साम्राज्य के संदर्भ में किया गया था, जिसे 740 और 722 ईसा पूर्व के बीच अश्शूरियों द्वारा इज़राइल से निर्वासित किया गया था, [29] साथ ही यहूदियों, बेंजामिनियों और लेवियों को भी निर्वासित किया गया था। 587 ईसा पूर्व में बेबीलोनियों द्वारा दक्षिणी साम्राज्य , और 70 ईस्वी में रोमन साम्राज्य द्वारा यहूदियों को रोमन यहूदिया से निर्वासित किया गया था। [30] बाद में इसका उपयोग इज़राइल की बिखरी हुई स्वदेशी आबादी के ऐतिहासिक आंदोलनों और निपटान पैटर्न के संदर्भ में किया जाने लगा। [31] जब इसका उपयोग यहूदी धर्म के संबंध में किया जाता है और जब इसे बिना संशोधक के पूंजीकृत किया जाता है (बस,डायस्पोरा), यह शब्द विशेष रूप से यहूदी डायस्पोरा को संदर्भित करता है ; [2] जब इसे पूंजीकृत नहीं किया जाता है, तो डायस्पोरा शब्द अन्य जातीय मूल वाले शरणार्थी या आप्रवासी आबादी को संदर्भित कर सकता है जो "स्वदेशी या स्थापित मातृभूमि से दूर" रह रहे हैं। [2] डायस्पोरा का व्यापक अनुप्रयोग विजित आबादी के भविष्य के क्षेत्रीय दावों को अस्वीकार करने के लिए असीरियन की दो-तरफ़ा सामूहिक निर्वासन नीति से विकसित हुआ। [32]

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी ऑनलाइन के अनुसार , अंग्रेजी भाषा में डायस्पोरा शब्द का पहला ज्ञात रिकॉर्डेड उपयोग 1876 में " महाद्वीप पर राष्ट्रीय प्रोटेस्टेंट चर्चों के बीच प्रचार के व्यापक डायस्पोरा कार्य (जैसा कि इसे कहा जाता है)" का संदर्भ था। [33] यह शब्द 1950 के दशक के मध्य तक अंग्रेजी में अधिक व्यापक रूप से समाहित हो गया, अन्य विशेष देशों या क्षेत्रों से महत्वपूर्ण संख्या में दीर्घकालिक प्रवासियों को भी डायस्पोरा के रूप में संदर्भित किया जाने लगा। [34] शब्द के इस अर्थ से संबंधित एक अकादमिक क्षेत्र, प्रवासी अध्ययन , स्थापित हो गया है। अंग्रेजी में, बड़े अक्षरों में, और बिना संशोधक के (अर्थात्, डायस्पोरा), यह शब्द विशेष रूप से यहूदी धर्म के संदर्भ में यहूदी प्रवासी को संदर्भित करता है। [35]

चीनी प्रवासी विश्व में तीसरा सबसे बड़ा है; ऑस्ट्रेलिया में सिडनी चाइनाटाउन में पाइफांग (टोर्ना) प्रवेश द्वार ।

सभी मामलों में, प्रवासी शब्द विस्थापन की भावना रखता है । इस प्रकार वर्णित जनसंख्या किसी भी कारण से स्वयं को अपने राष्ट्रीय क्षेत्र से अलग पाती है, और आम तौर पर, इसके लोगों को किसी बिंदु पर अपनी मातृभूमि में लौटने की आशा या कम से कम इच्छा होती है, यदि "मातृभूमि" अभी भी किसी सार्थक अर्थ में मौजूद है। कुछ लेखक [कौन?]ध्यान दिया गया है कि सार्थक विस्थापनों की एक श्रृंखला में लोगों के "फिर से जड़ें जमाने" के कारण प्रवासी भारतीयों में एकल घर के प्रति पुरानी यादें खो सकती हैं। इस अर्थ में, व्यक्तियों के पास अपने पूरे प्रवासी में कई घर हो सकते हैं, प्रत्येक के साथ किसी न किसी प्रकार का लगाव बनाए रखने के अलग-अलग कारण हो सकते हैं। प्रवासी सांस्कृतिक विकास अक्सर मूल निवास स्थान की जनसंख्या से भिन्न दिशा ग्रहण करता है। समय के साथ, दूर-दूर तक अलग-अलग समुदायों में संस्कृति, परंपराओं, भाषा और अन्य कारकों में भिन्नता आ जाती है। प्रवासी भारतीयों में सांस्कृतिक संबद्धता के अंतिम अवशेष अक्सर भाषा परिवर्तन के प्रति सामुदायिक प्रतिरोध और पारंपरिक धार्मिक अभ्यास के रखरखाव में पाए जाते हैं

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 2, March 2021 |

विचार-विमर्श

भाषाशास्त्र के अनुसार हिन्दी के चार प्रमुख रूप या शैलियाँ हैं :

1. मानक हिन्दी - हिन्दी का मानकीकृत रूप, जिसकी लिपि देवनागरी है। इसमें संस्कृत भाषा के कई शब्द है, जिन्होंने फ़ारसी और अरबी के कई शब्दों की जगह ले ली है। इसे 'शुद्ध हिन्दी' भी कहते हैं। यह खड़ीबोली पर आधारित है, जो दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती थी।
2. दक्षिणी - उर्दू-हिन्दी का वह रूप जो हैदराबाद और उसके आसपास की जगहों में बोला जाता है। इसमें फ़ारसी-अरबी के शब्द उर्दू की अपेक्षा कम होते हैं।
3. रेख्ता - उर्दू का वह रूप जो शायरी में प्रयुक्त होता था।
4. उर्दू - हिन्दी का वह रूप जो देवनागरी लिपि के बजाय फ़ारसी-अरबी लिपि में लिखा जाता है। इसमें संस्कृत के शब्द कम होते हैं, और फ़ारसी-अरबी के शब्द अधिक। यह भी खड़ीबोली पर ही आधारित है।[24]

हिन्दी और उर्दू दोनों को मिलाकर हिन्दुस्तानी भाषा कहा जाता है। हिन्दुस्तानी मानकीकृत हिन्दी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है। इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी-अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक। उच्च हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा है (अनुच्छेद 343, भारतीय संविधान)। यह इन भारतीय राज्यों की भी राजभाषा है : उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली। इन राज्यों के अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, पंजाब और हिन्दी भाषी राज्यों से लगते अन्य राज्यों में भी हिन्दी बोलने वालों की अच्छी संख्या है। उर्दू पाकिस्तान की और भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर की राजभाषा है, इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, बिहार, तेलंगाना और दिल्ली में द्वितीय राजभाषा है। यह लगभग सभी ऐसे राज्यों की सह-राजभाषा है; जिनकी मुख्य राजभाषा हिन्दी है। भाषाविद हिन्दी एवं उर्दू को एक ही भाषा समझते हैं। हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर अधिकांशतः संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करती है। उर्दू, नस्तालिक लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर फ़ारसी और अरबी भाषाओं का प्रभाव अधिक है। हालाँकि व्याकरणिक रूप से उर्दू और हिन्दी में कोई अन्तर नहीं है परन्तु कुछ विशेष क्षेत्रों में शब्दावली के स्रोत (जैसा कि ऊपर लिखा गया है) में अन्तर है। कुछ विशेष ध्वनियाँ उर्दू में अरबी और फ़ारसी से ली गयी हैं और इसी प्रकार फ़ारसी और अरबी की कुछ विशेष व्याकरणिक संरचनाएँ भी प्रयोग की जाती हैं। उर्दू और हिन्दी खड़ीबोली की दो आधिकारिक शैलियाँ हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से हिन्दी और देवनागरी के मानकीकरण की दिशा में निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रयास हुये हैं :-

- हिन्दी व्याकरण का मानकीकरण
- वर्तनी का मानकीकरण
- शिक्षा मंत्रालय के निर्देश पर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा देवनागरी का मानकीकरण
- वैज्ञानिक ढंग से देवनागरी लिखने के लिये एकरूपता के प्रयास
- यूनिकोड का विकास

हिन्दी का क्षेत्र विशाल है तथा हिन्दी की अनेक बोलियाँ (उपभाषाएँ) हैं। इनमें से कुछ में अत्यन्त उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना भी हुई है। ऐसी बोलियों में ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। ये बोलियाँ हिन्दी की विविधता हैं और उसकी शक्ति भी। वे हिन्दी की जड़ों को गहरा बनाती हैं। हिन्दी की बोलियाँ और उन बोलियों की उपबोलियाँ हैं जो न केवल अपने में एक बड़ी परम्परा, इतिहास, सभ्यता को समेटे हुए हैं वरन स्वतन्त्रता संग्राम, जनसंघर्ष, वर्तमान के बाजारवाद के विरुद्ध भी उसका रचना संसार सचेत है।[25]

हिन्दी की बोलियों में प्रमुख हैं- अवधी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली, बघेली, भोजपुरी, हरयाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, मालवी, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुमाउँनी, मगही आदि। किन्तु हिन्दी के मुख्य दो भेद हैं - पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी।

1991 में प्रकाशित एक लेख में विलियम सफ़्रान ने , [36] प्रवासी समुदायों को प्रवासी समुदायों से अलग करने के लिए छह नियम निर्धारित किए। इनमें मानदंड शामिल थे कि समूह अपनी मातृभूमि के बारे में एक मिथक या सामूहिक स्मृति बनाए रखता है; वे अपनी पैतृक मातृभूमि को अपना सच्चा घर मानते हैं, जहाँ वे अंततः लौटेंगे; उस मातृभूमि की बहाली या रखरखाव के लिए प्रतिबद्ध हैं, और वे मातृभूमि से "व्यक्तिगत या परोक्ष रूप से" उस बिंदु तक संबंधित हैं जहां यह उनकी पहचान को आकार देता है। [37] [38] [39] जबकि सफ़रान की परिभाषाएँ यहूदी प्रवासी के विचार से प्रभावित थीं, उन्होंने इस शब्द के बढ़ते उपयोग को मान्यता दी। [40]

रोजर्स ब्रुबेकर (2005) ने यह भी नोट किया कि डायस्पोरा शब्द का उपयोग व्यापक हो रहा है। उनका सुझाव है कि उपयोग में आने वाले इस विस्तार के एक तत्व में "डायस्पोरा शब्द का प्रयोग मामलों के लगातार बढ़ते सेट पर लागू होना शामिल है: अनिवार्य रूप से किसी भी और प्रत्येक नाम योग्य जनसंख्या श्रेणी के लिए जो कुछ हद तक अंतरिक्ष में फैली हुई है"। [41] ब्रुबेकर ने यह दिखाने के लिए वर्ल्डकैट डेटाबेस का उपयोग किया है कि 1900 और 1910 के बीच प्रवासी भारतीयों पर प्रकाशित 18 पुस्तकों में से 17 यहूदी प्रवासियों पर थीं। 1960 के दशक में अधिकांश कार्य भी यहूदी प्रवासी के बारे में थे, लेकिन 2002 में नमूना की गई 20 पुस्तकों में से केवल दो (कुल 253 में से) यहूदी मामले के बारे में थीं, जिसमें कुल आठ अलग-अलग प्रवासी शामिल थे। [42]

ब्रुबेकर ने डायस्पोरा शब्द के मूल उपयोग को इस प्रकार रेखांकित किया है:

प्रवासी भारतीयों की अधिकांश प्रारंभिक चर्चाएँ दृढ़ता से एक वैचारिक 'मातृभूमि' में निहित थीं; वे एक प्रतिमानात्मक मामले, या कम संख्या में मुख्य मामलों से चिंतित थे। बेशक, आदर्श मामला यहूदी प्रवासी था; डायस्पोरा की कुछ शब्दकोश परिभाषाएँ, हाल तक, केवल वर्णन नहीं करती थीं बल्कि उस मामले के संदर्भ में शब्द को परिभाषित करती थीं। [43]

न्यूयॉर्क शहर में अर्मेनियाई अमेरिकी नर्तक

ब्रुबेकर का तर्क है कि वाक्यांश के उपयोग के प्रारंभिक विस्तार ने इसे अन्य समान मामलों, जैसे अर्मेनियाई और ग्रीक डायस्पोरा तक बढ़ाया । हाल ही में, इसे उन प्रवासी समूहों पर लागू किया गया है जो विदेशों से अपनी मातृभूमि में अपनी भागीदारी जारी रखते हैं, जैसे कि बेनेडिक्ट एंडरसन द्वारा पहचाने गए लंबी दूरी के राष्ट्रवादियों की श्रेणी । ब्रुबेकर कहते हैं कि (उदाहरण के तौर पर): अल्बानियाई, बास्क, हिंदू भारतीय, आयरिश, जापानी, कश्मीरी, कोरियाई, कुर्द, फ़िलिस्तीनी और तमिलों को इस अर्थ में प्रवासी के रूप में अवधारणाबद्ध किया गया है। इसके अलावा, "श्रमिक प्रवासी जो (कुछ हद तक) अपनी मातृभूमि के साथ भावनात्मक और सामाजिक संबंध बनाए रखते हैं" को भी प्रवासी के रूप में वर्णित किया गया है। [43]

शब्द के उपयोग के आगे के मामलों में, "वैचारिक मातृभूमि का संदर्भ - 'शास्त्रीय' प्रवासी - अभी भी और अधिक क्षीण हो गया है, पूरी तरह से खो जाने की हद तक"। यहां, ब्रुबेकर ने हिंदू, सिख, बौद्ध, कन्फ्यूशियस, ह्यूजेनॉट, मुस्लिम और कैथोलिक 'प्रवासी' के साथ-साथ " ट्रांसएथनिक और ट्रांसबॉर्डर भाषाई श्रेणियों... जैसे कि फ्रैंकोफोन , एंग्लोफोन और लुसोफोन 'समुदाय'" का हवाला दिया है। [44] ब्रुबेकर का कहना है कि, 2005 तक , डिक्सी , श्वेत, उदारवादी, समलैंगिक, समलैंगिक और डिजिटल डायस्पोरा पर अकादमिक किताबें या लेख भी थे । [42]

कुछ पर्यवेक्षकों ने तूफान कैटरीना के मद्देनजर न्यू ऑरलियन्स और खाड़ी तट से निकासी को न्यू ऑरलियन्स डायस्पोरा करार दिया है, क्योंकि बड़ी संख्या में निकाले गए लोग वापस लौटने में सक्षम नहीं हैं, फिर भी ऐसा करने की आकांक्षाएं बरकरार हैं। [45] [46] एग्निज़्का वेनार (2010) ने इस शब्द के व्यापक उपयोग पर ध्यान दिया है, यह तर्क देते हुए कि हाल ही में, "साहित्य का एक बढ़ता हुआ समूह परिभाषा को सुधारने में सफल रहा है, जिसमें प्रवासी लोगों को लगभग किसी भी आबादी के रूप में परिभाषित किया गया है और अब इसका संदर्भ नहीं दिया गया है। उनके अस्तित्व का विशिष्ट संदर्भ "। [38]यह भी देखा गया है कि जैसे-जैसे करिश्माई ईसाई धर्म का तेजी से वैश्वीकरण होता जा रहा है, कई ईसाई खुद को एक प्रवासी के रूप में देखते हैं, और एक ऐसी कल्पना का निर्माण करते हैं जो जातीय प्रवासी लोगों की प्रमुख विशेषताओं की नकल करती है। [47]

व्यक्तियों के व्यावसायिक समुदाय जो अब अपनी मातृभूमि में नहीं हैं, उन्हें भी प्रवासी माना जा सकता है। उदाहरण के लिए, विज्ञान प्रवासी वैज्ञानिकों के समुदाय हैं जो अपनी मातृभूमि से दूर अपना शोध करते हैं [48] और व्यापारिक प्रवासी व्यापारी एलियंस के समुदाय हैं। 1996 में प्रकाशित एक लेख में, खाचिग टोलोलियन [49] का तर्क है कि मीडिया ने कॉर्पोरेट डायस्पोरा शब्द का उपयोग मनमाने ढंग से और गलत तरीके से किया है, उदाहरण के लिए "मध्य-स्तर, मध्य-कैरियर के अधिकारियों पर लागू किया गया है जिन्हें खोजने के लिए मजबूर किया गया है" कॉर्पोरेट उथल-पुथल के समय नए स्थान" (10) कॉर्पोरेट डायस्पोरा का उपयोगसमकालीन प्रवासन, विस्थापन और अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता से संबंधित घटनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला का वर्णन करने के लिए प्रवासी धारणा की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है। जबकि कॉरपोरेट डायस्पोरा ऐतिहासिक रूप से डायस्पोरा की धारणा से जुड़े हिंसा, जबरदस्ती और अप्राकृतिक उखाड़-पछाड़ के अर्थों से बचता है या उनका खंडन करता है, इसका विद्वतापूर्ण उपयोग उन तरीकों का वर्णन कर सकता है जिनमें निगम डायस्पोरा के साथ काम करते हैं। इस तरह, कॉर्पोरेट डायस्पोरा देर से पूंजीवाद के सांस्कृतिक तर्क को

नजरअंदाज किए बिना डायस्पोरिक संरचनाओं के नस्लीय इतिहास को सामने रख सकता है जिसमें निगम लोगों, छवियों, विचारधाराओं और पूंजी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार को व्यवस्थित करते हैं।

परिणाम

भारत की स्वतंत्रता के पहले और उसके बाद भी बहुत से लोग हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' कहते आये हैं (उदाहरणतः, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे आदि) किन्तु भारतीय संविधान में 'राष्ट्रभाषा' का उल्लेख नहीं हुआ है और इस दृष्टि से हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहने का कोई अर्थ नहीं है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहने के एक हिमायती महात्मा गांधी भी थे, जिन्होंने 29 मार्च 1918 को इन्दौर में आठवें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। उस समय उन्होंने अपने सार्वजनिक उद्बोधन में पहली बार आह्वान किया था कि हिन्दी को ही भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा मिलना चाहिये। उन्होने यह भी कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। [35] उन्होने तो यहाँ तक कहा था कि हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है। आजाद हिन्द फौज का राष्ट्रगान 'शुभ सुख चैन' भी "हिन्दुस्तानी" में था। उनका अभियान गीत 'कदम कदम बढ़ाए जा' भी इसी भाषा में था, परन्तु सुभाष चन्द्र बोस हिन्दुस्तानी भाषा के संस्कृतकरण के पक्षधर नहीं थे, अतः शुभ सुख चैन को जनगणमन के ही धुन पर, बिना कठिन संस्कृत शब्दावली के बनाया गया था।

अटलांटिक दास व्यापार के दौरान उप-सहारा अफ्रीकियों का प्रवासी सबसे कुख्यात आधुनिक प्रवासी में से एक है। पश्चिमी अफ़्रीका से 10.7 मिलियन लोग 16वीं सदी के अंत से लेकर 19वीं सदी तक गुलामों के रूप में अमेरिका पहुंचने के लिए परिवहन से बच गए। [50] हालाँकि, अटलांटिक दास व्यापार के बाहर, अफ्रीकी प्रवासी समुदाय सहस्राब्दियों से अस्तित्व में हैं। जबकि कुछ समुदाय दास-आधारित थे, अन्य समूह विभिन्न कारणों से पलायन कर गए।

8वीं से 19वीं शताब्दी तक, अरब दास व्यापार ने लाखों अफ्रीकियों को एशिया और हिंद महासागर के द्वीपों में फैला दिया। [51] इस्लामी दास व्यापार के परिणामस्वरूप भारत में अफ्रीकी मूल के समुदायों का भी निर्माण हुआ है, विशेष रूप से सिद्दी , मकरानी और श्रीलंका काफ़िर । [52]

दूसरी शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में, अक्सुम राज्य (आधुनिक इथियोपिया) ने अरब प्रायद्वीप पर उपनिवेश बनाए। 5वीं शताब्दी के दौरान, रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार मार्ग स्थापित करने के बाद अक्सुमाइट अभिजात वर्ग ने ईसाई धर्म अपनाना शुरू कर दिया । 6वीं शताब्दी में, राजा कालेब ने क्षेत्र में उत्पीड़न के तहत ईसाइयों की सहायता के लिए हिम्यार (आधुनिक यमन) में कई आक्रमण किए । इन अभियानों के दौरान, क्षेत्र की सुखद जलवायु और कृषि समृद्धि के कारण, सैनिकों के कई समूहों ने अक्सुम नहीं लौटने का फैसला किया। अनुमान है कि इन समूहों का आकार 600 से लेकर 3000 के दशक के मध्य तक था [53] ।

पहले, राष्ट्रीय अफ्रीकी पासपोर्ट वाले प्रवासी अफ्रीकी केवल उन्नत वीजा के बिना तेरह अफ्रीकी देशों में प्रवेश कर सकते थे। एकीकृत भविष्य को आगे बढ़ाने के लिए, अफ्रीकी संघ (एयू) ने जुलाई 2016 में एक अफ्रीकी संघ पासपोर्ट लॉन्च किया, जिससे एयू के 55 सदस्य देशों में से एक के पासपोर्ट वाले लोगों को इस वीज़ा मुक्त पासपोर्ट के तहत इन देशों के बीच स्वतंत्र रूप से स्थानांतरित करने और प्रवासियों को प्रोत्साहित करने की अनुमति मिली। अफ़्रीका लौटने के लिए राष्ट्रीय अफ़्रीकी पासपोर्ट के साथ। [54] [55] [56]

विश्व में सबसे बड़ा एशियाई प्रवासी भारतीय प्रवासी है। प्रवासी भारतीय समुदाय, जिसकी अनुमानित संख्या 17.5 मिलियन से अधिक है, दुनिया के कई क्षेत्रों, हर महाद्वीप में फैला हुआ है। यह विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, संस्कृतियों और आस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले एक विविध, विषम और उदार वैश्विक समुदाय का गठन करता है (देसी देखें)। [57] इसी तरह, रोमानी , जिनकी संख्या यूरोप में लगभग 12 मिलियन है [58] भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी उत्पत्ति का पता लगाते हैं , और यूरोप में उनकी उपस्थिति पहली बार मध्य युग में प्रमाणित होती है । [59] [60]

सबसे पहला ज्ञात एशियाई प्रवासी यहूदी प्रवासी है । बेबीलोनियन कैद में जड़ें और बाद में हेलेनिज्म के तहत प्रवासन के साथ , प्रवासी भारतीयों के बहुमत को यहूदिया की यहूदी आबादी के रोमन विजय, निष्कासन और दासता के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है , [61] जिनके वंशज अश्केनाज़िम , सेफर्डिम और मिज़्राहिम बन गए । आज, [62] [63] जिनकी संख्या लगभग 15 मिलियन है, जिनमें से 8 मिलियन अभी भी प्रवासी भारतीयों में रहते हैं, [64] हालांकि यह संख्या ज़ायोनी आप्रवासन से पहले जो अब इज़राइल है, बहुत अधिक थी।और नरसंहार में 6 मिलियन यहूदियों की हत्या ।

चीनी उत्प्रवास (जिसे चीनी डायस्पोरा भी कहा जाता है; प्रवासी चीनी भी देखें) [65] पहली बार हजारों साल पहले हुआ था। 19वीं सदी से 1949 तक हुआ सामूहिक प्रवासन मुख्य रूप से मुख्य भूमि चीन में युद्ध और भुखमरी के साथ-साथ राजनीतिक भ्रष्टाचार के कारण हुआ। अधिकांश प्रवासी अशिक्षित या कम पढ़े-लिखे किसान थे, जिन्हें अब-मान्यता प्राप्त नस्लीय कुली (चीनी: 苦力, शाब्दिक रूप से "कठिन श्रम") कहा जाता है, जो श्रम की आवश्यकता के कारण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देशों में चले गए। दक्षिण पूर्व एशिया, मलाया और अन्य स्थान।

नेपाली प्रवासी की कम से कम तीन लहरों की पहचान की जा सकती है। सबसे पहली लहर सैकड़ों साल पहले की है जब कम उम्र में शादी और उच्च जन्मदर के कारण हिंदू बसावट पूर्व की ओर नेपाल में, फिर सिक्किम और भूटान में फैल गई थी। 1980 के दशक में एक प्रतिक्रिया विकसित हुई जब भूटान के राजनीतिक अभिजात वर्ग को एहसास हुआ कि भूटानी बौद्धों को अपने ही देश में अल्पसंख्यक बनने का खतरा है। भूटान से कम से कम 60,000 जातीय नेपालियों को संयुक्त राज्य अमेरिका में पुनर्स्थापित किया गया है। [66] दूसरी लहर 1815 के आसपास शुरू हुई भाड़े के सैनिकों की ब्रिटिश भर्ती और सेवानिवृत्ति के बाद ब्रिटिश द्वीपों में पुनर्वास से प्रेरित थी।और दक्षिण पूर्व एशिया. तीसरी लहर 1970 के दशक में शुरू हुई जब भूमि की कमी बढ़ गई और नेपाल में शिक्षित श्रमिकों की संख्या नौकरी के अवसरों से कहीं अधिक हो गई। नौकरी से संबंधित उत्प्रवास ने भारत, मध्य पूर्व, यूरोप और उत्तरी अमेरिका के धनी देशों में नेपाली परिक्षेत्रों का निर्माण किया। नेपाल के बाहर रहने वाले नेपालियों की संख्या का वर्तमान अनुमान लाखों में है।

सियाम में, क्षेत्र के कई राज्यों के बीच क्षेत्रीय सत्ता संघर्ष के कारण 1700-1800 के दशक के बीच जातीय लाओ के एक बड़े प्रवासी ने सियामी शासकों द्वारा सियामी साम्राज्य के पूर्वोत्तर क्षेत्र के बड़े क्षेत्रों को बसाया, जहां 2012 में लाओ जातीयता अभी भी एक प्रमुख कारक है। इस अवधि के दौरान, सियाम ने लाओ राजधानी को नष्ट कर दिया, लाओ राजा अनुवोंगसे पर कब्जा कर लिया, यातना दी और मार डाला , जिन्होंने 19 वीं शताब्दी में लाओ विद्रोह का नेतृत्व किया था ।

निष्कर्ष

सन् 1998 के पूर्व, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आँकड़े मिलते थे, उनमें हिन्दी को तीसरा स्थान दिया जाता था। सन् 1997 में 'सैंसस ऑफ़ इण्डिया' का भारतीय भाषाओं के विश्लेषण का ग्रन्थ प्रकाशित होने तथा संसार की भाषाओं की रिपोर्ट तैयार करने के लिए यूनेस्को द्वारा सन् 1998 में भेजी गई यूनेस्को प्रश्नावली के आधार पर उन्हें भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर महावीर सरन जैन द्वारा भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के बाद अब विश्व स्तर पर यह स्वीकृत है कि मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है। चीनी भाषा के बोलने वालों की संख्या हिन्दी भाषा से अधिक है किन्तु चीनी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा सीमित है। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा अधिक है किन्तु मातृभाषियों की संख्या अंग्रेजी भाषियों से अधिक है।

विश्वभाषा बनने के सभी गुण हिन्दी में विद्यमान हैं।[41] बीसवीं सदी के अन्तिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तरराष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है।[42] हिन्दी एशिया के व्यापारिक जगत् में धीरे-धीरे अपना स्वरूप बिम्बित कर भविष्य की अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है।[43] वेब, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिन्दी की माँग जिस तेजी से बढ़ी है वैसी किसी और भाषा में नहीं। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों तथा सैकड़ों छोटे-बड़े केन्द्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है। विदेशों में 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ लगभग नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के 'हम एफ़-एम' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डॉयचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

दिसम्बर 2016 में विश्व आर्थिक मंच ने 10 सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की जो सूची जारी की है उसमें हिन्दी भी एक है।[8] इसी प्रकार 'कोर लैंग्वेजेज' नामक साइट ने 'दस सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषाओं'[44] में हिन्दी को स्थान दिया था। के-इण्टरनेशनल ने वर्ष 2017 के लिये सीखने योग्य सर्वाधिक उपयुक्त नौ भाषाओं[45] में हिन्दी को स्थान दिया है।

हिन्दी का एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने और विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन को संस्थागत व्यवस्था प्रदान करने के उद्देश्य से 11 फरवरी 2008 को विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना की गयी थी। संयुक्त राष्ट्र रेडियो अपना प्रसारण हिन्दी में भी करना आरम्भ किया है। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाये जाने के लिए भारत सरकार प्रयत्नशील है। अगस्त 2018 से संयुक्त राष्ट्र ने साप्ताहिक हिन्दी समाचार बुलेटिन आरम्भ किया है। [46]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "Why Hindi isn't the national language". मूल से 3 जून 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 जून 2019.
2. ↑ Khan, Saeed (25 जनवरी 2010). "There's no national language in India: Gujarat High Court". The Times of India. Ahmedabad: The Times Group. मूल से 18 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 मई 2014.
3. ↑ "Hindi is 3rd most spoken language in the world with 615 million speakers after English, Mandarin". मूल से 14 अप्रैल 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 फ़रवरी 2020.
4. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ "These are the most powerful languages in the world". World Economic Forum. मूल से 24 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 1 मार्च 2019.
5. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ इ "How languages intersect in India". Hindustan Times. मूल से 22 नवंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 नवंबर 2018.

6. ↑ "Hindi mother tongue of 44% in India, Bangla second most spoken". मूल से 20 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 27 जून 2018.
7. ↑ "What India speaks: South Indian languages are growing, but not as fast as Hindi". मूल से 16 फ़रवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 29 जून 2018.
8. ↑ "Only 12% Hindi speakers bilingual: Census". मूल से 13 नवंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 नवंबर 2018.
9. ↑ "How many Indians can you talk to?". www.hindustantimes.com. मूल से 22 नवंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 1 मार्च 2019.
10. ↑ "Hindi the first choice of people in only 12 States". मूल से 6 जून 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 जून 2019.
11. डेमिर, सारा (2017)। "1915 में अश्शूरियों के विरुद्ध अत्याचार: एक कानूनी परिप्रेक्ष्य"। ट्रैविस में, हैनिबल (सं.)। असीरियन नरसंहार: सांस्कृतिक और राजनीतिक विरासतें । रूटलेज। आईएसबीएन 978-1-351-98025-8.
12. ^ गौंट, डेविड; अट्टो, नौरेस; बार्थोमा, सोनेर ओ. (2019)। "परिचय: प्रथम विश्व युद्ध में सैफो को प्रासंगिक बनाना"। लेट देम नॉट रिटर्न: सैफो - ओटोमन साम्राज्य में असीरियन, सिरिएक और कलडीन ईसाइयों के खिलाफ नरसंहार । बरगहन पुस्तकें। आईएसबीएन 978-1-78533-499-3.
13. ^ डेविड आर. मोंटगोमरी (14 मई 2007)। गंदगी: सभ्यताओं का क्षरण । कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस. आईएसबीएन 978-0-520-93316-3.
14. ^ "द हाइलैंड क्लीयरेंस" । ऐतिहासिक यूके । 9 सितंबर 2021 को लिया गया ।
15. ^ साइमन ब्रॉटन; मार्क एलिंगहैम; रिचर्ड ट्रिलो (1999)। विश्व संगीत: अफ़्रीका, यूरोप और मध्य पूर्व । रफ गाइड. पी। 147 . आईएसबीएन 978-1-85828-635-8. 8 दिसंबर 2015 को लिया गया .
16. ^ "घर का कोई रास्ता नहीं: फ़िलिस्तीनी प्रवासी की त्रासदी" । स्वतंत्र . 22 अक्टूबर 2009 । 23 नवंबर 2019 को लिया गया ।
17. ^ ब्लॉक्सहैम, डोनाल्ड (2005)। नरसंहार का महान खेल: साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद, और ओटोमन अर्मेनियाई लोगों का विनाश । ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
18. ^ हारुत्युन्यान, अरुस। जातीय रूप से सजातीय राज्य में राष्ट्रीय पहचान का मुकाबला: अर्मेनियाई लोकतंत्रीकरण का मामला । पश्चिमी मिशिगन विश्वविद्यालय। पी। 192. आईएसबीएन 9781109120127.
19. ^ वर्ट्ज़, जेम्स जे. (मार्च 2008)। "थिंग्स फॉल अपार्ट: कन्टेनिंग द स्पिलओवर फ्रॉम एन इराकी सिविल वॉर बाय डेनियल एल. बायमन और केनेथ एम. पोलाक"। राजनीति विज्ञान त्रैमासिक । 123 (1): 157-158. doi : 10.1002/j.1538-165x.2008.tb00621.x । आईएसएसएन 0032-3195 .
20. ^ "कॉन्स्टेंटिनोपल का पतन" । एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । 19 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत । 2 अगस्त 2020 को पुनःप्राप्त .